-ज्योतिष दैवज्ञ-

ज्योतिष फलादेश, पेपर-1 (6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री तथा 2. डी. वी. डी. स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती हैं।

प्रवेश हेतु योग्यता- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठयक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत के पाठ्यक्रम जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र– सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर-1

ज्योतिष दैवज्ञ- Syllabus

(ज्योतिष फलादेश का प्रारम्भिक ज्ञान तथा सूत्र)

ज्योतिष शास्त्र का परिचय, ज्योतिष का इतिहास व आधार, वारक्रम का सिद्धांत, भारतीय मासादि के नाम, ज्योतिष की वर्णमाला, अंतरिक्ष माप, काल गणना, राशियाँ उनके नाम, नक्षत्र परिचय, नक्षत्र एवं राशियों के नाम, राशि परिचय, राशियां और उनके स्वामी ग्रह, 12 राशियां और उनका स्वरूप, राशियों के स्वामी तथा उच्च–नीच, मूल त्रिकोण राशि, राशियों के तत्व, संज्ञा व लक्षण, चर–स्थिरादि। राशियों का फलादेश में उपयोग, ग्रहों का विचार यूरेनस, नेप्च्यून व प्लूटो तथा अन्य दूर क्षेत्रीय ग्रह, ग्रहों की दृष्टियाँ, ग्रहों की आपसी मैत्री शत्रुता, कुण्डली के 12 भाव, नवग्रहों से विचारणीय विषय, ग्रहों का अधिकार, द्वादश लग्न में जन्म का फल, गण्डमूल, द्वादश राशियों में ग्रहों के फल, लग्नादि 12 भाव में ग्रहों के फल, भाव स्वामी का भिन्न–भिन्न भावों में रहने का फल, देश, काल और परिस्थिति, विंशोत्तरीदशा, भाव भावेश और कारक, राशियों का स्वामित्व, भावेश एवं भाव कारक, ग्रहों के आपसी सम्बंध, ग्रहों का नैसर्गिक शुभाशुभत्व, ग्रहों की कुमारादि अवस्था, ग्रहों की दृष्टियाँ, ग्रहों की विशेष दृष्टियाँ, कुण्डली के केंद्र स्थान, कुण्डली के त्रिकोंणेश, त्रिकोंणेश की शुभता, कुण्डली के त्रिषडायाधीश, तीनो वर्गो में उत्तरोत्तर प्रबलता, द्वितीयेश एवं द्वादशेश, अष्टमभाव व अष्टमेश, केन्द्राधिपत्य दोष, अष्टमेश दोष, क्रूर या पाप केन्द्राधिपति, राहु या केतु योगकारक भी, राहु केतु का राजयोग, ग्रहों की योग योगकारक स्थितियां, ग्रहों की विशेष फलदायकता, योगकारक स्थितियों के उदाहरण, बलवान दशमेश एवं नवमेश, योग कारक, त्रिकोणेशों के साथ बलवान केन्द्रेश, ग्रहों का 6 प्रकार से फल, योगकारक व पाप स्थान स्वामी का फल, एक ही ग्रह केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश, दशमेश एवं लग्नेश का सम्बंध, नवमेश एवं दशमेश का सम्बंध, आयु विचार, दशायु एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि, जैमिनीय मतानुसार आयु अनुमान, आयु वृद्धि ह्रास के नियम, मारकेश दशा विचार, दशाफल विचार, असम्बंधी केन्द्रेश और त्रिकोणेश की भुक्ति, मारकग्रहों की अन्तर्दशा में राजयोग, शनि एवं शुक्र की परस्पर मित्रता, लग्नेश का केन्द्र–त्रिकोण स्वामियों से सम्बंध, फलादेश में नवांश का विशेष महत्व।

ज्योतिष दैवज्ञाचार्य

ज्योतिष गणित, पेपर-2 (6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठ्यक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर–2

ज्योतिष दैवज्ञाचार्य- Syllabus

(खगोल एवं गणित ज्योतिष)

खगोल शास्त्र :- सौर मण्डल, आकाशीय दूरियां, भूकेन्द्रीय व सूर्यकेन्द्रीय संहितायें, अंतरग्रह, बहिर्ग्रह, चन्द्रमा की पृथ्वी से दूरी, केपलर के लियम, भौगोलिक रेखांश व अक्षांश, प्राकृतिक अपग्रह, धूमकेतु, छुद्र ग्रह, उल्का, उल्कापात व उल्काश्म, सौर वायु, खगोल एवं खगोलीय विषुवत रेखा, क्रांतिवृत, भचक्र, बसंत विषुवत, शरद विषुवत, भोगांश और विक्षेप, विषुवांश और दिक्पात, उन्नतांश और दिगंश, राशिमान, नक्षत्रकाल–संयुतिकाल दोनों में अंतर, राहु और केतु, ग्रहों की कक्षाओं का झुकाव, भू–अक्षीय झुकाव एवं सार्थकता, सायन निरयन एवं अयनांश की गणना, नाक्ष दिन एवं सौर दिन, ग्रहण, चन्द्र कलायें, वक्री ग्रह, ग्रहों का उदय व अस्त, ग्रह युद्व।

आधुनिक विधि से कुण्डली निर्माण :- प्राचीन एवं आधुनिक समय मापक, ग्रीनविच औसत समय या सार्वदेशिक समय, एफीमेरीज समय, स्थानीय औसत समय, मानक समय, समय कटिबंध, दिन, मास, वर्ष, अन्य संवत, अयन, लग्न, कुण्डलियों के प्रकार,, राशियां, ग्रह, नक्षत्र, स्थानीय समय शोधन, सूर्योदय और सूर्यास्त, दृष्ट मध्याह्न, दिन–रात्रि, सूर्योदय और सूर्यास्त समय की गणना, जन्म कालीन सम्पातिक काल व लग्न गणना, युद्ध समय का संस्कार, ग्रीष्म कालीन संस्कार, दक्षिणी अशांशों के लिये लग्न गणना, ग्रहों के भोगांश की गणना, जन्मकुण्डली बनाने के उदाहरण। जन्म राशि, जन्म नक्षत्र, नक्षत्र पद, चन्द्रमा के भोगांश से विंशोत्तरी दशा शेष की गणना, अंतर्दशा, प्रत्यांतर दशा, सूक्षम दशा, प्राण दशा, वर्तमान दशा की गणना, प्रत्यंतर दशा तक दशा सारणियां। इष्टकाल, राशिमान, लग्न गणना, ग्रहों के भोगांश की गणना, विंशोत्तरी दशा शेष की गणना। लग्न एवं दशम स्पष्ट, जन्म एवं भाव कुण्डली, प्रारम्भ या मध्य बिन्दु, दशम स्पष्ट, भाव एवं चलित कुण्लियों की गणना।

वर्ग- राशि, होरा, द्रेष्कांण, चतुर्थांश, पंचमांश, षष्टांश, सप्तमांश, अष्टमांश, नवमांश,, दशमांश, एकादशांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशांश, चतुर्विंशांश, सप्तविंशांश, त्रिशांश, खवेदांश, अक्षवेदांश, षष्टियांश, वर्ग विभाजन, वर्गों की सारणियां, कुण्डली एवं वर्गों का उदाहरण।

उपग्रह या तृतीयक ग्रह- गणना की विधि, काल परिधि, धूम, अर्धप्रहार, यमघंटक, इंद्रचाप, मांदी, पात एवं उपकेतु।

पंचांग- तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, पंचांग के इन पांच अंगों की गणना की विधिएवं उदाहरण।

ग्रह बल-भाव बल- स्थान बल, दिग्बल, काल बल, चेष्टा बल, नैसर्गिक बल, दृष्टि बल, या दिग् बल, षडबल पिण्ड, इष्ट एवं कष्ट फल। भावाधिपति बल, भावदिग बल, भाव दृष्टि बल, कुल भाव बल। ग्रह एवं भाव बल की धारणायें।

द्वितीय वर्ष

-ज्योतिष शिरोमणी-

ज्योतिष फलादेश, पेपर-3 (6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठयक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- पाठ्यक्रम तथा सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **""Shukracharya Astro Pvt. Ltd.""** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (3 अथवा 6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर–3

ज्योतिष शिरोमणी (भाग-1) Syllabus

(आधुनिक विधि से कुण्डली की विवेचना, मेदिनी ज्योतिष एवं मुहूर्त चिंतामणी)

कुण्डली का अध्ययन कैसे करें?:- ग्रहों का करकत्व, कुण्डली में ग्रहों की शुभ स्थितियां और उनका जातक के चरित्र पर प्रभाव। **प्रथम भाव-** लग्न एवं लग्नेश का महत्व, विभिन्न भावों में स्थित लग्नेश का परिणाम, लग्न में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, प्रथम भाव से सम्बंधित कुछ महत्वपूर्ण योग। **द्वितीय भाव-** विभिन्न भावों में स्थित द्वितीयेश के परिणाम, द्वितीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम, इन्दु लग्न और आर्थिक समृद्धि, इन्दु लग्न की व्याख्या, सर्वाष्टकवर्ग के द्वारा आर्थिक समृद्धि का आंकलन करने की विधि। **तृतीय भाव-** तृतीयेश की विभिन्न भावों में स्थिति होने के परिणाम, तृतीय भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों का परिणाम, तृतीय भाव में चन्द्रमा और शुक्र की युति। **चतुर्थ भाव-** विभिन्न भावों में स्थित चतुर्थेश के परिणाम, चतुर्थ भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, घर और भू–सम्पत्ति सम्बंधित योग, महलों जैसे विशाल घरों का स्वामित्व। **पंचम भाव-** विभिन्न भावों में स्थित पंचमेश के परिणाम पंचम भाव में स्थित ग्रहों के परिणाम, बीज स्फुट एवं क्षेत्र स्फुट और इनकी संतान हेतु गणना। **षष्ट भाव-** विभिन्न भावों में स्थित षष्टेश के परिणाम षष्ट भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम। **सप्तम भाव-** विभिन्न भावों में स्थित सप्तमेश के परिणाम सप्तम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम। विभिन्न राशियों में स्थित शुक्र के परिणाम, विवाह के संदर्भ में शुक्र की विभिन्न भावों में स्थिति के परिणाम, मंगल अथवा कुज दोष। **अष्टम भाव-** विभिन्न भावों में स्थित अष्टमेश के परिणाम अष्टम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम। **नवम भाव-** विभिन्न भावों में स्थित नवमेश के परिणाम नवम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम। **दशम भाव-** विभिन्न भावों में स्थित दशमेश के परिणाम दशम भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, दशम भाव की राशियों के अनुसार व्यवसाय, इंजीनियर, संगीतकार, होने के योग, सिनेमा अभिनेता होने के योग, आजीविका/व्यापार विचार, उच्चस्तर की आत्मायें– महात्माओं की कुण्डलियां, जीवन में एक उद्देश्य वाले स्त्री/पुरूष, सत्तच्युत होना (जीवन में संकट), राजनीतिज्ञ। **एकादश भाव-** विभिन्न भावों में स्थित एकादशेश के परिणाम एकादश भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम। **द्वादश भाव-** विभिन्न भावों में स्थित द्वादशेश के परिणाम द्वादश भाव में स्थित विभिन्न ग्रहों के परिणाम, विदेश यात्रा के योग। राहु–केतु का विभिन्न भावों में परिणाम, गोचर में अष्टकवर्ग, विभिन्न ग्रहों की दशाओं–अंतर्दशाओं के परिणाम, योगिनी दशा, नक्षत्रों का स्वरूप और उनका जातकों पर प्रभाव, नक्षत्रों का लिंग, नक्षत्रों का वर्गिकरण, वर्ग कुण्डलियों का महत्व, **योग-** केन्द्र–त्रिकोंण का सम्बंध, उच्च पद देने वाले प्रमुख जैमिनी योग, चन्द्र योग, सूर्य योग, नाभस योग, कारक योग, ग्रहों की विभिन्न युतियों के परिणाम, दो ग्रहों की युति तीन ग्रहों की युति, चतुर्गही योग।

मेदिनी ज्योतिष :- मेदिनी ज्योतिष में ग्रहों के कारकत्व, मेदिनी ज्योतिष में भावों के कारकत्व, विभिन्न देशों की राशियां, कूर्मचक्र, महत्वपूर्ण कुण्डलियां एवं सिद्धांत, भारत की कुण्डली, शुक्र का गोचर और भारत की घटनायें, रोहिणी नक्षत्र में शनि/राहु का गोचर,, वर्ष का स्वामी और मंत्रिपरिषद्, वर्ष कुण्डली के आधार पर फलकथन, राशि संकटा चक्र, ग्रहों की युति–दृष्टि, विभिन्न राशियों में होने वाले सूर्य और चन्द्र ग्रहणों का प्रभाव, मौसम की भविष्यवाणी के सिद्धांत, भूकम्प।

मुहूर्त (मुहूर्त चिंतामणी से) :- तिथि के प्रकार (नंदा, जया आदि), नक्षत्रों के प्रकार, तारा, नक्षत्र गणना, वार, होरा, योग, करण, भद्रा, भद्रा निवास, भद्रा मुख। मास, अधिमास, क्षय मास, आयन, उतरायण एवं दक्षिणायन। सर्वार्थ सिद्धि योग। विवाह मुहूर्त, दुकान खोलने का मुहूर्त, गृह प्रवेश मुहूर्त, यात्रा मुहूर्त, शुक्र, गुरू अस्त विचार, देव शयन विचार, तात्कालिक मुहूर्त, चौघड़िया, होरा काल, राहु काल। विवाह, गृह प्रवेश अथवा किसी महत्वपूर्ण घटना का मुहूर्त।

द्वितीय वर्ष

ज्योतिष शिरोमणी (भाग-2) Syllabus

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठयक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- पाठ्यक्रम तथा सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (3 अथवा 6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर–4

ज्योतिष शिरोमणी (भाग-2) Syllabus

(गोचरफल दपर्ण, वर्षफल, प्रश्न कुण्डली (षटपंचाषिका), जैमिनी सिद्धांत एवं फलादेश)

गोचर :- गोचर अलौकिक संदेशवाहक, शास्त्रों में चन्द्रमा का महत्व, चन्द्रमा से गोचर के फल, गोचर और पुराण, गोचर पर अन्य प्रभाव, भाव सिद्धि काल–फलप्राप्ति के समय की संभावना, अष्टकवर्ग से गोचर,, कुछ अप्रचलित गोचर सिद्धांत, वर्ग कुण्डलियों में गोचर,, विशिष्ट गोचर, सर्वतोभद्र चक्र, दुर्लभ किन्तु उपयोगी चक्र, जन्मकाल शुद्धिकरण।

वर्ष फल :- वर्षफल सम्बंधित महत्वपूर्ण विशेषतायें, वर्ष फल आवश्यक तत्व, सूर्यप्रवेश तथा वर्ष कुण्डली की रचना, मुंथा गणना तथा मुंथा की उपयोगिता, ग्रहबल, वर्ष कुण्डली में प्रयुक्त दशायें, वर्षेश निर्णय एवं सम्बंधित सिद्धांत, त्रिपताकी चक्र, सहम, ताजिक योग, वर्षफल तथा फलित सिद्धांत, वर्ष कुण्डली तथा दशा विवेचन, वर्ष कुण्डली तथा भाव विवेचन, वर्षफल तथा विभिन्न घटनायें।

प्रश्न कुंडली के सिद्धांत- प्रश्न कुण्डली बनाना तथा प्रश्न कुण्डली से फलादेश के सिद्धांत। विभिन्न प्रश्नों का विचार कैसे करें। कार्य कब सिद्ध होगा, चोरी, बीमारी, विवाह, संतान, व्यापार इत्यादि से सम्बंधित प्रश्नों का प्रश्न कुंडली द्वारा कैसे विचार करें। कार्य का होने या न होने का विचार। घटना घटित होने का समय, घटना होगी भी या नहीं, यदि होगी तो कब?।

उपाय :- ग्रहों के अशुभ प्रभावों के उपाय, उपायों में रत्नों–उपरत्नों का महत्व, उपाय में यंत्रों का महत्व, मंत्रों का महत्व, ग्रहों की पूजा आदि। प्राचीन शास्त्रीय तथा नवीन पद्धति से ग्रहदोषों को शांत करने के उपाय, ग्रहों के अनुष्ठान की आवश्यक जानकारी/पूजा इत्यादि।

तृतीय वर्ष

ज्योतिष तत्वेत्ता 'रिसर्च'

(माह में 1 दिन उपस्थिति आवश्यक है)

प्रवेश हेतु योग्यता- रिसर्च कार्य हेतु प्रवेशार्थी के लिये प्रथम एवं द्वितीय वर्ष **ज्योतिष दैवज्ञाचार्य एवं ज्योतिष शिरोमणी** की सभी परीक्षायें उत्तीर्ण करना आवश्यक है। अथवा किसी प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान से इसके समकक्ष पाठ्यक्रम की परीक्षायें उत्तीर्ण की हों।

पाठ्यक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 12000/– रू देय होगा।

प्रवेश प्रणाली- पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क की राशि का **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से जो कि दिल्ली के लिये देय हो, **मल्टीसिटी चैक** (क्रॉस चेक) अथवा **डिमाण्ड ड्राफ्ट** बनवाकर प्रोस्पेक्टस में लगे फार्म के साथ मुख्य कार्यालय अथवा क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर विद्यार्थी सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

पाठ्य सामग्री- पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी को क्योकि अनेक संदर्भ ग्रन्थों की आवश्यकता होती है, अतः पाठ्य सामग्री (आवश्यक पुस्तकें) बाजार से खरीदने की सलाह दी जायेगी।

पाठ्यक्रम की अवधि एवं कक्षायें- पाठ्यक्रम की अवधि 1 वर्ष है। कक्षाओं की आवश्यकता नहीं होती, विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने गाइड (अध्यापक) से सुविधानुसार समय लेकर माह में एक दिन अवश्य मिलकर शोधकार्य हेतु मार्गदर्शन प्राप्त करें।

शोध का परिणाम- शोध का परिणाम शोधपत्र जमा करवाने की तिथि से 15–20 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** दिल्ली में अथवा केन्द्र की वेबसाईट– **www.shukracharya.com** पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत (एक वर्ष के उपरांत) में, दिल्ली में किसी सेमीनार में शोधपत्र जमा होने तथा उसकी जांच होने के उपरांत सम्मान के साथ दिया जायेगा। शोधपत्र जमा किये बिना प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर-5, तृतीय वर्ष (रिसर्च)

(शोधकार्य के उपरांत शोधपत्र प्रस्तुत करना होगा)

पाठ्यक्रम

ज्योतिष तत्वेत्ता

यह पाठ्यक्रम केवल शोध एवं अनुसंधान पर आधारित है। शोध के लिये ज्योतिष के शास्त्रीय ग्रन्थों से अनुसंधान करवाया जायेगा। ग्रह–नक्षत्रों के आधार पर कुण्डली के किसी एक भाव पर या वर्षफल, गोचर, जैमिनीय पद्धति, कृष्णामूर्ति पद्धति, मांगलिक विचार अथवा कुण्डली मिलान या पंचांग एवं मुहूर्त में से किसी एक विषय पर अनुसंधान करवाया जायेगा। क्योकि इस पाठ्यक्रम में केवल शोध एवं अनुसंधान किया जाता है। अतः पाठ्यक्रम की अवधि (एक वर्ष) पूर्ण होने पर चुने गये विषय पर अपना शोधपत्र पस्तुत करना होगा तथा शोधपत्र के नियमों व प्रयोग को मौखिक रूप से समझाना भी होगा।

शोध कार्य (रिसर्च) निम्नलिखित प्रकार से किया जायेगा-

1. शोध के लिये विषय का चुनाव करना।
2. चुने गये विषय पर शास्त्रों में उपलब्ध सामग्री की सूची बनाकर एकत्र करना।
3. प्रश्नावली तैयार करना।
4. विषय से सम्बंधित विभिन्न पुस्तकों से आंकड़े एकत्रित करना (कम–से–कम 100 या अधिक)।
5. शास्त्रीय ग्रन्थों से उपलब्ध फलादेश के नियमों का चुने हुए विषयों पर प्रयोग करना।
6. फलादेश के नियम एवं फल का सम्बंध उल्लेखित करना।
7. शोध के लिये चुने गये विषयों पर नियम को लागू करके प्रयोग समझाना (मौखिक परीक्षा)।
9. शोध पत्र लिखना और केन्द्र में जमा करवाना।

प्रथम भाग

हस्तरेखा विशारद (अवधि 6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- रेग्युलर, सप्ताहांत अथवा पत्राचार (तीनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठयक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत से पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- रेग्युलर पाठ्यक्रम तथा सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (3 अथवा 6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर–1

हस्तरेखा विशारद-Syllabus

हाथ की बनावट और भेद, अंगुलियाँ और उसके लक्षण, नख, शंख, चक्र, शुक्ति, यव आदि का वर्णन, ग्रहस्थानों की उच्चता, अनुच्चता और अत्युच्चता का फल, अंगुष्ठ उसके भेद और फलादि का विचार, हथेली की कोमलता और कठोरता का विचार, हाथ के सप्त ग्रह क्षेत्र और चन्द्र क्षेत्र का निर्णय, ग्रहों के स्वभाव भेद से मानव स्वभाव में भेद, ग्रहों के फलादेश में अशुभ चिन्ह कृत भेद, ग्रह स्थानों की उच्चता–अनुच्चता आदि तथा उनके अन्य क्षेत्रों की ओर झुकावों से फलादेश, मणिबन्ध शुभाशुभ विचार, हस्तरेखाओं के वर्ण स्वरूप भेद और उनके फल, हस्तरेखाओं के वर्ण भेद, रेखाओं के स्वरूपभेद और फल, मस्तक रेखा ज्ञान रेखा, (मातृरेखा) का विस्तृत विचार, हस्तरेखाओं का तुलनात्मक विचार, आयुरेखा (पितृरेखा) का विस्तृत विचार, जीवन रेखा का परिचय और विशेष फल, शासक रेखा और उसका फल, सहायक जीवनरेखा (मंगलरेखा) और उसका फल, अवरोध रेखा और उसका फल, भाग्य रेखा, भाग्यरेखा के चार उद्गमस्थान, आरोग्य रेखा या स्वास्थ्य रेखा का विस्तृत विचार, उद्गमभेद से भाग्य रेखा का फलादेश, आरोग्य रेखा या स्वास्थ्य रेखा का विस्तृत विचार, स्वास्थ्य रेखा का तुलनात्मक विचार और फलादेश, हृदयरेखा के 16 भेद और उनके रहस्य, हृदयरेखा का परिचय और फलादेश, विवाह और विवाह–रेखा ।

द्वितीय भाग

-हस्तरेखा शिरोमणी-

समग्र हस्तरेखा शास्त्र (6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- रेग्युलर, सप्ताहांत अथवा पत्राचार (तीनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठ्यक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत से पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- रेग्युलर पाठ्यक्रम तथा सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (3 अथवा 6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर–2

हस्तरेखा शिरोमणी- Syllabus

मणिबन्ध स्थित रेखाओं एवं चिन्हों का विचार, हस्तस्थित ग्रहों के क्षेत्रों, चन्द्रपर्वत की रेखाओं एवं चिन्हों का विचार, चन्द्ररेखा–पर्वत–हस्त विचार, हस्त स्थित मंगल का पर्वत, रेखाओं एवं चिन्हों का विचार, हस्तस्थित बुधपर्वत, रेखाओं, चिन्हों एवं विवाह रेखा का विचार, सूर्यक्षेत्र, क्षेत्रीय चिन्ह, रेखा ओर अनामिकांगुलि का विचार, शनि–क्षेत्र, मध्यमांगुलि, शनिरेखा और चिन्ह, मित्ररेखा, भाग्य और धन रेखा तथा व्यवसायादि का विस्तृत विचार, गुरूक्षेत्र क्षेत्रीय चिन्ह रेखा और तर्जनी का विचार, शुक्रक्षेत्र, अंगुष्ठ, उसके भेद, संतानरेखा, बन्धु–बान्धवरेखा, भ्रातृ–भगिनीरेखा और उनके अनेक गुप्त रहस्यों का विस्तृत विवेचन, राहुक्षेत्र (हथेली), राहुरेखा और चिन्हों का विचार, राहुक्षेत्र वाले व्यक्ति का स्वभाव विचार, मस्तकरेखा ज्ञानरेखा, (मातृरेखा) का विस्तृत विचार, रेखाज्ञानार्थ आध्यात्मिक दृष्टि परमावश्यक, रेखाओं के वर्ण–स्वरूप–भेद और उनके फल, मस्तकरेखा–चिन्ह एवं हस्त विचार, आयुरेखा (पितृरेखा) का विस्तृत विचार, आरोग्यरेखा या स्वास्थ्यरेखा का विस्तृत विचार, आयुरेखा या हृदयरेखा का विस्तृत विचार, भाग्यरेखा, ऊर्ध्वरेखा या इन्दिरारेखा का विस्तृत विचार, ग्रह–रेखा, चिन्ह और पर्वतों के मिश्रित योग। मुखाकृति विज्ञान (फेस रीड़िग) तथा शरीर आकृति व लक्षण से फलादेश।

वास्तु-शिरोमणी

वास्तु सिद्धांत- (6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- रेग्युलर, सप्ताहांत अथवा पत्राचार (तीनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठ्यक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत से पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- रेग्युलर पाठ्यक्रम तथा सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (3 अथवा 6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर

वास्तु-शिरोमणी- Syllabus

वास्तु शास्त्र का परिचय :- मानव जीवन और वास्तुशास्त्र, पंच महाभूतो की पहचान एवं प्रभाव, भूमि की आकृति, भूमि की ढलान, भूमि का चयन, भूमि की आकृति, भूमि का ढलान, भूमि का कोण, भूमि परीक्षण, भूमि दिशा विचार। द्वार वेध, वृक्ष वेध, नलकूप वेध, स्तंभ वेध, इमारत वेध, मार्ग वेध एवं विभिन्न प्रकार के वेध, वास्तु निवारण के सरल उपाय, वास्तु के चमत्कारी 12 सूत्र, वास्तुशास्त्र और मानसिक तनाव, वास्तुशास्त्र में दक्षिण दिशा।

गृह वास्तु विचार :- वास्तुशास्त्र के प्रारम्भिक नियम, वास्तुमण्डल, दिशायें और उनके स्वामी, वास्तुशास्त्र और ज्योतिष शास्त्र, राशियाँ और दिशायें, दिशाभिमुखता, वीथीशूल, जल का स्रोत, भवन में जल का भडारण, जल का निष्कासन, चार दीवारी, मुख्यद्वार, खिड़कियाँ, रोशनदान, सीढ़ियां, गैरेज, गृहस्वामी का कक्ष, शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, भोजन कक्ष, अतिथि कक्ष, पूजा कक्ष, रसोई घर, शौचालय, स्नान गृह, भंडार गृह, बरामदा, भूगर्भ गृह, ब्रह्मस्थान का विचार। गृह सज्जा वास्तु अनुसार, कक्ष का रंग, वास्तु अनुरूप गृह निर्माण, मांगलिक वस्तुयें, सुख व समृद्धि के टोटके, पिरामिड। भवन निर्माण के लिये शुभ मुहूर्त, फैंगशुई और वास्तुशास्त्र, वास्तु से नवग्रहों का सम्बंध, वास्तु दोष विचार, वास्तु दोष निवारण विधि, भवन के रेखाचित्र द्वारा वास्तु विचार।

-अंक शास्त्र-

अंक शास्त्राचार्य (6 माह)

पाठ्यक्रम सप्ताहांत अथवा पत्राचार से उपलब्ध

सप्ताहांत कक्षायें- कक्षायें सप्ताह में केवल दो दिन (शनि तथा रविवार) उपलब्ध हैं। 2 घं. एक दिन में (अवधि 6 माह।)

पत्राचार- पाठ्य सामग्री विद्यार्थी को उपलब्ध करवाई जाती है, वे स्वयं अध्ययन करते हैं। (कोर्स की अवधि 6 माह।)

पाठ्य सामग्री ?- 1. प्रिंटिड पाठ्य सामग्री स्थानीय केन्द्र से उपलब्ध करवाई जाती है।

प्रवेश हेतु योग्यता- रेग्युलर, सप्ताहांत अथवा पत्राचार (तीनों प्रकार) से पाठ्यक्रम के लिये प्रवेशार्थी की आयु कम–से–कम 18 वर्ष तथा शिक्षा कम–से–कम 10+2 पास या अधिक होनी चाहिये।

पाठ्यक्रम की भाषा- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) से पाठ्यक्रम केवल मातृभाषा **हिन्दी** में ही उपलब्ध होगा, अतः प्रवेशार्थी के लिये आवश्यक है कि उसे हिन्दी पढ़ना या समझना आना चाहिये।

सत्र आरम्भ समय- सप्ताहांत से पाठ्यक्रम– जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्तूबर के प्रथम सप्ताह से आरम्भ होंगे। एडमीशन की अंतिम तिथि प्रत्येक सत्र के प्रथम सप्ताह की अंतिम तिथि होगी। पत्राचार पाठ्यक्रम में कभी भी (किसी भी माह, किसी भी तिथि में) प्रवेश ले सकते हैं।

प्रवेश प्रणाली- सप्ताहांत अथवा पत्राचार (दोनों प्रकार) में से किस प्रकार के तथा किस पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी प्रवेश लेना चाहता है?यह प्रवेश के समय ही निश्चित कर लें। प्रवेश लेने के पश्चात् प्रवेशार्थी को दूसरे प्रकार अथवा किसी दूसरे पाठ्यक्रम में स्थानांतरित नहीं किया जायेगा। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिये प्रवेशार्थी प्रोस्पेक्टस में दी गयी सम्पूर्ण जानकारी तथा नियमों को ठीक से पढ़ लें तथा प्रवेश लेने के लिये चुने गये पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क राशि अपने क्षेत्रीय कार्यालय में जमा करवाकर रसीद प्राप्त कर लें। अपना एडमीशन सुनिश्चित करने के लिये 7 से 10 दिन में वेबसाईट www.shukracharya.com पर कक्षा सूची में अपना नाम देखें। स्वेच्छा से पाठ्यक्रम छोड़ने पर फीस की राशि लौटाई नहीं जायेगी।

परीक्षा में बैठने के लिये कक्षा में उपस्थिति- रेग्युलर पाठ्यक्रम तथा सप्ताहांत कक्षाओं की परीक्षा में बैठने के लिये कम–से–कम 75 प्रतिशत उपस्थिति आवश्यक है। विशेष परिस्थिति में पाठ्यक्रम संचालक का निर्णय ही अंतिम होगा। परंतु पत्राचार के विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने के लिये कक्षाओं में उपस्थिति आवश्यक नहीं है।

परिचय पत्र- सभी पाठ्यक्रमों के प्रत्येक विद्यार्थी को प्रवेश लेने (पाठ्यक्रम शुल्क जमा करवाने) के उपरांत पाठ्यक्रम अवधि तक के लिये फोटो लगा परिचय पत्र दिया जायेगा।

सप्ताहांत पाठयक्रम के लिये शुल्क- पाठ्यक्रम शुल्क 4500/– रू देय होगा।

पत्राचार से पाठयक्रम के लिये शुल्क - पाठ्यक्रम शुल्क 3000/–रू देय होगा।

पाठ्यक्रम शुल्क केवल मल्टीसिटी चैक (क्रॉस चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट के द्वारा, जो की **"Shukracharya Astro Pvt. Ltd."** के नाम से दिल्ली के लिये देय हो, बनाकर अपने स्थानीय केन्द्र में जमा करवायें। पाठ्यक्रम शुल्क नकद स्वीकार्य नहीं होगा।

परीक्षा सप्ताहांत पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- प्रत्येक सत्र (3 अथवा 6 माह) के लिये परीक्षा सत्र के अंतिम सप्ताह में क्षेत्रीय केन्द्र में ही सम्पन्न करवाये जायेंगे। पेपर 70 अंक का लिखित, तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा पत्राचार पाठयक्रम के विद्यार्थीयों के लिये- परीक्षा प्रत्येक सत्र के अंत में (6 माह के अंतराल में) आप के आस–पास स्थानीय सेंटर में ही होंगी। पेपर 70 अंक का लिखित तथा 30 अंक का मौखिक (कुल 100 अंक) का होगा।

परीक्षा का परिणाम- परीक्षा का परिणाम परीक्षा की तिथि से 30 दिन के उपरांत घोषित कर दिया जायेगा। परीक्षा के परिणाम **Shukracharya Astrological Research Centre** के स्थानीय केन्द्र अथवा **www.shukracharya.com** वेबसाईट पर भी देखे जा सकते हैं।

प्रमाणपत्र- पाठ्यक्रम का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अंत में दिया जायेगा। परीक्षा से पूर्व प्रमाणपत्र नहीं दिया जायेगा।

पेपर

अंक शास्त्राचार्य- Syllabus

अंकों का हमारे जीवन में महत्व, अंकों के स्वामी ग्रह, ऊर्जा, तत्व, भाव, दिशाऐं, मित्रादि अंक, सम्बंधित अंग, रंग इत्यादि। अग्रेंजी एवं हिन्दी अक्षरों को अंकों में बदलने की विधियाँ और मत, मूलांक क्या है?, मूलांक गणना, मूलांकों द्वारा व्यक्तित्व, स्वभाव, सावधानीयाँ, स्वामी ग्रह, मूलांकों के लिये महत्वपूर्ण तारीखें, मास, वर्ष, वार, रंग, दिशाऐं, तत्व, महत्वपूर्ण (करने योग्य) व्यवसाय, स्वास्थ्य एवं बिमारियाँ, मित्रादि अंक, भाग्यांक क्या है?, मूलांक और भाग्यांक में अन्तर ?, भाग्यांक की गणना, भाग्यांक फल, स्वामी ग्रह, शुभ तारीख, वार, माह, वर्ष, दिशा, यंत्र, रंग, मंत्र। कम्पनी का लाभकारी नाम निकालने की विधि। व्यक्ति का भाग्यवर्द्धक नाम निकालने की विधि, जन्म तारीख का फल, मेलापक विवाह तथा साझेदारी के लिये, मेलापक गणना विधि एवं नियम, नामांक क्या है?, कहाँ कौन से नाम का प्रयोग करें, गणना, स्वामी ग्रह, फल, अक्षरों का प्रभाव, नाम को अनुकूल बनायें, भाग्यशाली नाम का चयन, अंक कुण्डली परिचय, गणना, रचना, नियम, ग्रह व अंक स्थापित करना, अंकों की सुदृढ़ता, धरातल एवं गणना, अंक कुण्डली में ग्रहों द्वारा निर्मित योग एवं उन योगों का फल, अंक कुण्डली द्वारा ग्रह दशा निर्धारित करने की गणना एवं ग्रह दशा का फल, वर्षांक परिचय, वर्षांक गणना एवं फल कथन, मासांक परिचय, मासांक गणना एवं फल कथन, सप्ताह अंक परिचय, सप्ताह अंक गणना एवं फल कथन, दैनिक अंक परिचय, दैनिक अंक गणना एवं फल कथन, मूक प्रश्न, मूक प्रश्न परिचय, मूक प्रश्न गणना विधि, मूक प्रश्न आवश्यक नियम, मूक प्रश्न रचना, प्रश्न विचार, प्रश्न विचार परिचय, प्रश्नों के उत्तर देने के लिये आवश्यक नियम, कार्य सिद्धि प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना व फल कथन, लाभ–हानि प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना व फल कथन, चोरी हुई वस्तु सम्बंधी प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना व फल कथन, चोरी हुई वस्तु की दिशा का पता लगाना, चोरी हुई वस्तु की दूरी का पता लगाना, प्रवासी आगमन सम्बंधी प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना, फल कथन एवं दिशा ज्ञान, रोगी सम्बंधी प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना व फल कथन, हार–जीत, विजय–पराजय (प्रतियोगिता, प्रवेश परीक्षा इत्यादि) प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना व फल कथन, गर्भ सम्बंधी प्रश्न एवं उसके उत्तर की गणना व फल कथन। किसी कार्य की अवधि जानना। गर्ग पद्धति द्वारा उपरोक्त प्रश्नों के लिये गणना विधि, होरा शास्त्र परिचय, भारतीय मतानुसार होरा गणना, सूक्ष्म होरा गणना, अनुकूल–प्रतिकूल होरा एवं सूक्ष्म होरा की गणना, अमृत घटी गणना, पाश्चात्य मतानुसार होरा गणना, होरा चक्र, पाश्चात्य मतानुसार अनुकूल–प्रतिकूल होरा एवं सूक्ष्म होरा की गणना, चाईनीज न्यूमरोलॉजी में लो–शू चक्र परिचय, लो–शू चक्र रचना, लो–शू चक्र में तल एवं उनका फल कथन, लो–शू चक्र में उपस्थित अंकों की सुदृढ़ता एवं अंको का प्रभाव एवं फल कथन, लो–शू चक्र में अनुपस्थित अंकों की सुदृढ़ता एवं अंको का प्रभाव एवं फल कथन, लो–शू चक्र विधि द्वारा भाग्यांक प्रभाव एवं फल कथन।